बाल भारती पब्लिक स्कूल ,पीतमपुरा

कक्षा -चार २१.१२.२०२०-२४.१२.२०२०

विषय - कहानी उपविषय : जन्मदिन के बहाने

शिक्षण परिणाम

- प्रत्येक विद्यार्थी उक्त पाठ में से कम से कम ४-५ वाक्य शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सकेगा |
- पाठ में आए नवीन शब्दों का अर्थ समझ अपने शब्द भंडार में वृद्धि कर सकेगा |
- ज़रूरतमंदों की मदद , सहानुभूति , दयालुता आदि मूल्यों का महत्व समझ पाएगा |

ऊर्जावर्धक गतिविधि :-

जन्मदिन से संबंधित गीत " हम भी अगर बच्चे होते ....."यूट्यूब वीडियो के माध्यम से दिखाया एवं गाया जाएगा |

पाठ का सार :-

'दूसरों को ख़ुशी देने में ही सच्चा सुख है ' यही इस कहानी का मुख्य भाव है |

अर्चना और अर्पिता जुड़वाँ बहनें हैं जिनका जन्मदिन जून में आता है | छुट्टियाँ होने से उनकी सभी सहेलियाँ शहर से बाहर चली जाती हैं | इस बात से वे दुखी थीं | माँ ने उनसे जन्मदिन का प्रोग्राम बनाने को कहा | उन दोनों ने जब अपना प्रोग्राम बताया तो माँ ने ने बताया कि उनके यहाँ काम करने वाली लक्ष्मी की बेटी छाया का जन्मदिन भी उसी दिन है और इस अवसर पर वे उसे सुंदर - सी फ्रॉक बना कर देना चाहती हैं |दोनों बहनों ने इस काम के लिए अपनी हामी दी और तीनों ने मिलकर कुल बारह फ्रॉकें बनाईं | जन्मदिन वाले दिन जब उन्होंने छाया को फ्रॉकें दी तो वह और उसकी माँ ख़ुशी से रोने लगीं |उनकी ख़ुशी देख कर अर्चना और अर्पिता को यह अनुभव हुआ कि सच्चा सुख देने में है |

पढ़ें और सीखें :- नवीन शब्द (उत्तर-पुस्तिका कार्य)

चिंतित	नाश्ता	आरंभ
मुद्रा	मुसकरा	अनोखे
जन्मदिन	पिक्चर	धन्यवाद
छुट्टियाँ	फ्रॉक	सहमति
समस्या	लक्ष्मी	रुआँसी

सीखिए :- शब्द -अर्थ

मुद्रा == हाव-भाव	यादगार == याद रखने योग्य
जुड़वाँ == जिनका जन्म एक साथ हो	डेढ़ महीने ==४५ दिन
समस्या == परेशानी	उपहार ==तोहफ़ा
रुआँसी == रोने को होने वाली	भावुक == भावों से भरा

(शब्दार्थ में दिए गए शब्दों में से किन्हीं पाँच शब्दों से वाक्य बनाएँ)

BBSP

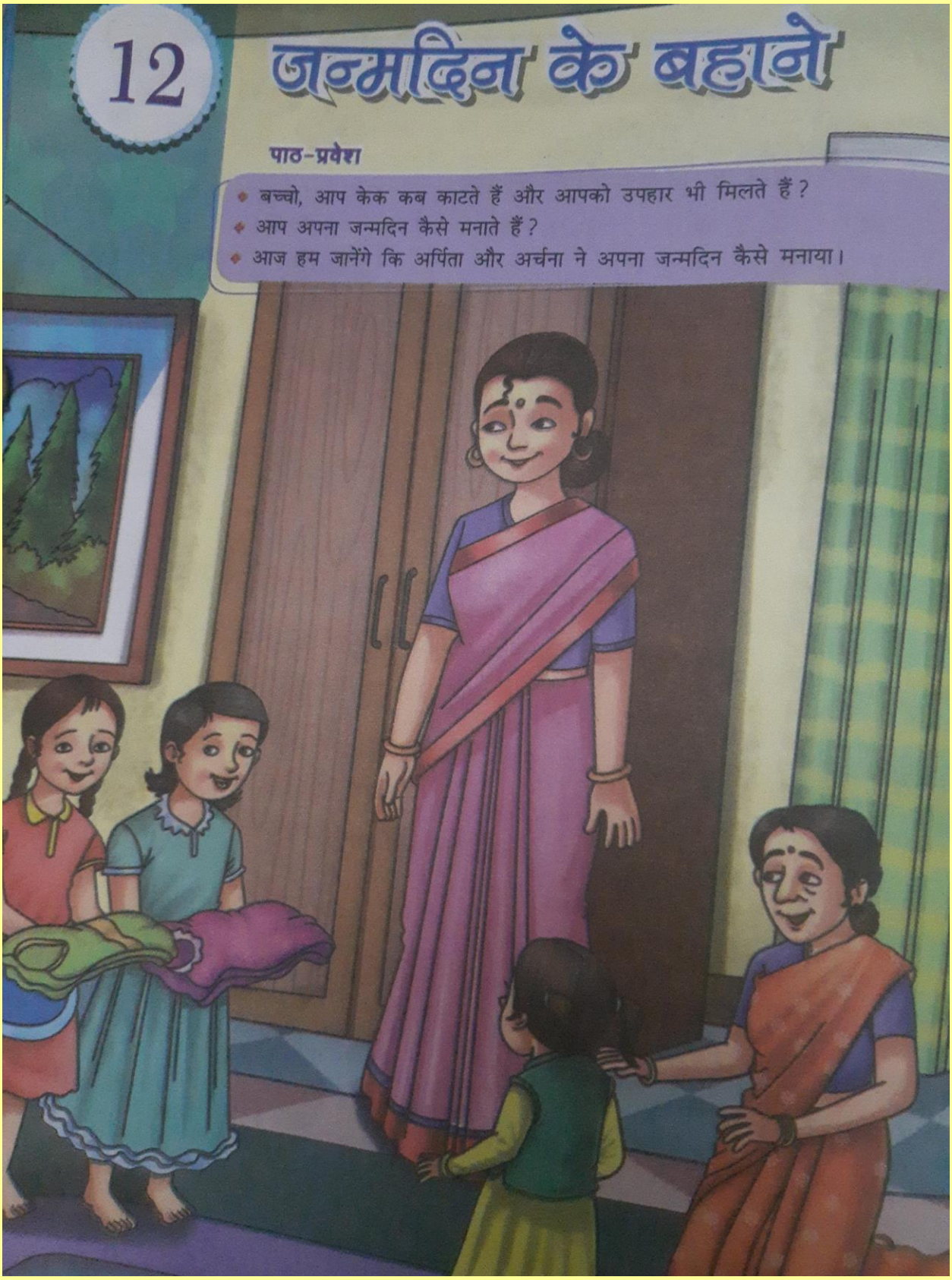
12
जन्मदिन के बहाने
पाठ-प्रवेश
बच्चो, आप केक कब काटते हैं और आपको उपहार भी मिलते हैं?
आप अपना जन्मदिन कैसे मनाते हैं?
आज हम जानेंगे कि अर्पिता और अर्चना ने अपना जन्मदिन कैसे मनाया।

मम्मी ने जब कमरे में प्रवेश किया तब अर्पिता और अर्चना चिंतित मुद्रा में लग रही थीं।

"क्या बात है? मेरी बेटियाँ बड़ी गंभीर नज़र आ रही हैं!"

"मम्मी! हमारा जन्मदिन जून में क्यों पड़ता है?" अर्पिता ने जवाब में प्रश्न ही पूछ लिया।

"क्योंकि तुम जुड़वाँ बहनें जून में पैदा हुई थीं!" हँसते हुए मम्मी ने कहा।

"जून में तो जन्मदिन का सारा मज़ा ही खत्म हो जाता है। हमारी सभी सहेलियाँ तो छुट्टियाँ होते ही बाहर चली जाती हैं।" अर्पिता ने अपनी समस्या बताई।

"ओह! तो यह समस्या है।" कुछ सोचते हुए मम्मी बोलीं।

"हाँ, यही समस्या है।" रुआँसी दोनों बहनें मम्मी की ओर देखने लगीं।

"ठीक है। तुम दोनों ऐसा करो कि खूब सोच-समझकर एक अच्छा-सा प्रोग्राम बनाओ, जिसमें तुम्हें लगे कि तुम्हें खूब मज़ा आएगा। इस बार तुम दोनों का जन्मदिन कुछ ऐसे मनाएँगे कि वह यादगार बन जाए और तुम्हें सच्चा सुख भी मिले।" मम्मी बोलीं।

"लेकिन कैसे?"

"तुम दोनों सोचो। कोई एक प्लान तो बनाओ, फिर उसमें कुछ जोड़-घटा लेंगे।" मम्मी उठते हुए बोलीं।

"मम्मी...!" अर्पिता ने कहा।

"बेटा! अभी जन्मदिन को पूरा डेढ़ महीना बाकी है और नाश्ता हमें अभी करना है। मैं नाश्ता बना लूँ, फिर बैठते हैं। तब तक तुम दोनों सोचो।" मम्मी उठकर चली गईं। नाश्ते के बाद तीनों साथ बैठीं।

"बताओ, तुम लोगों ने क्या प्रोग्राम बनाया है?" मम्मी ने पूछा।

"बहुत अच्छा प्रोग्राम है लेकिन आप उसमें से कुछ भी नहीं काटेंगी।" अर्चना बोली।

"ठीक है, कुछ नहीं काटेंगे। अब तो बताओगी!" मम्मी मुसकरा दीं।

"हम सब पिकनिक मनाने चलेंगे।" अर्चना ने कहा।

"ठीक है।" मम्मी ने मान लिया।

"घर आकर हम लोग पिकनिक का सामान रख देंगे और पिक्चर देखने चलें जाएँगे।" अर्पिता ने जोड़ा।

"यह भी मान लिया।" मम्मी ने स्वीकृति दे दी।

"वहीं से हम लोग कहीं बाहर होटल में रात का खाना भी खाएँगे।" अर्चना ने बात पूरी की।

"और आइसक्रीम भी," अर्पिता ने छूटी कड़ी जोड़ी।

"चलो, यह भी मान लिया।"

मम्मी के यह कहते ही दोनों बहनें खुशी से उछल पड़ीं। दोनों ने आगे बढ़कर मम्मी का गाल चूम लिया।

"यह तो था तुम्हारा प्रोग्राम, जो पूरा का पूरा मैंने मान लिया। क्या अब इसमें मैं भी कुछ जोड़ दूँ?" मम्मी ने पूछा।

"हाँ, लेकिन पूरा दिन तो निकल गया। आप कहाँ पर जोड़ेंगी?" अर्चना ने पूछा।

"एकदम सुबह।"

"ठीक है, बताइए।" अर्पिता ने कहा।

"तुम दोनों को पता है, हमारे घर में जो लक्ष्मी काम करती है उसकी एक छोटी-सी बिटिया है..." बीच में अर्चना बोली, "हाँ, देखा है, कई बार वह घर भी आई है।"

"उसका जन्मदिन भी उसी दिन है जिस दिन तुम्हारा है।" मम्मी ने बताया।

"अच्छा! कैसा संयोग है।" अर्चना बोली।

"लेकिन आप ये सब बातें हमें क्यों बता रही हैं?" अर्पिता ने पूछा।

"इसलिए कि मेरे पास फ्रॉक का सुंदर-सा कपड़ा है। मैं चाहती हूँ कि मैं उसकी कटिंग कर दूँ और तुम लोग उसपर मशीन चलाकर उसके लिए फ्रॉक बना दो और अपने जन्मदिन पर अपने हाथों से उसे दो।" दोनों की ओर देखते हुए मम्मी बोलीं। दोनों बहनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और आँखों ही आँखों में कुछ बात की।

"लेकिन मम्मी हमें तो मशीन चलानी भी नहीं आती।" अर्पिता ने कहा। "कोई बात नहीं, तुम तो केवल मशीन का हैंडिल ही घुमाना।"

"ठीक है मम्मी, आपने हमारा पूरा प्रोग्राम मान लिया है तो हम भी आपका यह प्रोग्राम मान लेते हैं।" अर्पिता ने सहमति प्रकट की।

अगले ही दिन से माँ और बेटियों का कटाई-सिलाई का काम आरंभ हो गया। मम्मी कपड़े को तरीके से रखतीं, फिर दोनों में से कोई एक हैंडिल घुमाती। धीरे-धीरे मम्मी ने सिलाई करने का तरीका बताया। मम्मी बताती जातीं और दोनों सिलाई करती जातीं। कुछ ही दिनों में कपड़े ने फ्रॉक का आकार ले लिया। कब महीना बीत गया, पता ही नहीं चला। मम्मी कुछ और कपड़े खरीदकर ले आईं। इसी प्रकार तीनों ने मिलकर उनको भी सिल डाला। रंग-बिरंगी फ्रॉकें सिलकर तैयार हुईं तो वे खुशी से झूम उठीं।

"अर्पिता, अर्चना, पता है आज क्या तारीख है?" मम्मी ने अपनी प्यारी बेटियों से पूछा।

"अरे! परसों तो हमारा जन्मदिन है!" अर्चना चौंक उठी।

"कमाल है! डेढ़ महीना निकल गया और पता ही नहीं चला!" आश्चर्य से अर्पिता ने कहा।

"सच! इस बार काम-काम में छुट्टियाँ बीत गईं और बोर होने का समय ही नहीं मिला!" अर्चना बोली तो सभी खिलखिलाकर हँस पड़े।

"तुम्हें पता है, इन दिनों में हमने कितनी फ्रॉकें बनाई हैं? बारह फ्रॉकें!" मम्मी ने प्रसन्नता से बताया।

दोनों बहनें आश्चर्य से एक-दूसरे का मुँह देखने लगीं। फिर अर्पिता ने कहा, "मम्मी! हमारे इस जन्मदिन पर उपहार तो आपने हमें पहले ही दे दिया।"

"कहाँ दिया?... तुम लोग मेरी अलमारी में से निकाल लाईं क्या?" चौंककर मम्मी बोलीं।

"मैं उस उपहार की नहीं, इस उपहार की बात कर रही हूँ।" अर्पिता ने कहा।

"इस उपहार की... मतलब?" आश्चर्य से मम्मी ने पूछा।

"मम्मी! मैं आपके दिए इस सिलाई के ज्ञान की बात कर रही हूँ।" अर्पिता बोली।

"अच्छा! शैतान लड़की।" मम्मी मुसकराए बिना नहीं रह सकीं।

जन्मदिन की शुरुआत एक अनोखे ढंग से हुई। जब तक दोनों बहनें नहा-धोकर तैयार हुईं, लक्ष्मी और छाया आ चुकी थीं। मम्मी ने उन्हें पहले ही बुला रखा था पिकनिक पर ले जाने के लिए जो कुछ भी बना था, पहले उन दोनों को खिलाया। उसके बाद दोनों बहनों ने अपने हाथ से बनी सारी फ्रॉकें नन्ही छाया को जन्मदिन की बधाई के साथ दे दीं। इतनी सारी फ्रॉकें पाकर वे दोनों खुशी से रोने लगीं। उन्हें विदा करके सब लोग पिकनिक के लिए निकले तो अर्पिता ने भावुक स्वर में कहा, "मम्मी! आपने सच कहा था। यह जन्मदिन यादगार और सच्चा सुख देनेवाला है। आज हमने 'देने' का सुख जाना!"

अर्चना भी मम्मी के गले से लगकर बोली, "धन्यवाद, मम्मी।"

खुशी में डूबती-उतरती टोली को लेकर कार पिकनिक की मंज़िल की ओर बढ़ चली।

—*नीलम राकेश चन्द्रा*

माइंड मैप

जन्मदिन के बहाने

1. जून में छुट्टियों के दौरान जन्मदिन आने के कारण अर्पिता और अर्चना बहुत दुखी थीं। मम्मी ने उनका जन्मदिन यादगार बनाने की योजना बनाई।

2. अर्पिता और अर्चना ने अपने जन्मदिन का पूरा प्रोग्राम बताया। मम्मी ने अपने घर काम करनेवाली लक्ष्मी की बेटी के लिए एक फ्रॉक बनाने की बात कही।

3. पूरी छुट्टियों में दोनों बहनों और माँ ने मिलकर बारह फ्रॉकें बनाई और नन्ही छाया को उपहारस्वरूप दीं जिसे पाकर वह बहुत खुश हुई।

4. दोनों बहनों ने माँ को उनका जन्मदिन यादगार बनाने के लिए धन्यवाद दिया।